मजदूरों का अपना कोई देश नहीं होता । दुनियाँ के मजदूरो एक हो ।

फरीदाबाद मजदूर समाचार

मजदूरों की मुक्ति खुद मजदूरों का काम है । दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा ।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

नई सीरीज नम्बर 20 फरवरी 1990 50 पैसे

दो नजरिये

आज के विश्व में हमारा दैनिक अनुभव सुखद नहीं है । हर रोज, हर पल शोषण और दमन पर आधारित मानव को पशु बनाने की प्रक्रिया को हम अपने चारों तरफ देखते हैं । पर यह कैसे सम्भव है कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी से यह ढर्रा चल रहा है ?

मानव अपनी सन्तानों में स्वयं को पुनः उत्पन्न ही नहीं करते बल्कि वे अपने सामाजिक स्वरूप को भी पुनः उत्पन्न करते हैं । एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी के शारीरिक के साथ ही साथ उसके सामाजिक स्वरूप को भी जन्म देती है । सामाजिक स्वरूप के दोहराये जाने की प्रक्रिया बहुत जटिल है और इसकी सम्पूर्णता में इसे समझना आवश्यक है । इस समाज में सामाजिक जीवन का भौतिक उत्पादन और पुनः उत्पादन सामाजिक स्वरूप के रूप-रंग को निर्धारित करता है । सामाजिक जीवन के लिये आवश्यक इस रोटी-कपड़ा-मकान सुरक्षा को हासिल व पुनः हासिल करने की जीवन-क्रिया को समझने के लिये चिन्तन की एक नई पद्धति का विकास सर्वोपरि महत्व का है ।

नये ढंग से सोचने-समझने की हमें जरूरत क्यों है ? वर्तमान चिन्तन पद्धति में क्या खामी है ? यह बहुत ही विवेक सम्मत प्रश्न हैं । पर इनका उत्तर देने के लिए हमें कुछ और चीजों को अधिक गहराई से देखना होगा ।

अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में हम कई काम करते हैं और कई घटनाओं से हमारा सामना होता है । हम सब सोचने समझने वाले मानव हैं । इसलिए हम अपने कार्यों और घटनाओं को समझने की कोशिश करते हैं ताकि अपने विचारों में तुलनात्मक मात्रा में सुसंगतता प्राप्त कर सकें ।

आइये एक फैक्ट्री का उदाहरण ले कर मामले को देखें । फैक्ट्री एक स्थान है जहां मजदूर जाते हैं, निश्चित घन्टों के लिए काम करते हैं और बदले में वेतन पाते हैं । अब देखिये, यह फैक्ट्री जोकि किसी माल का प्रोडक्शन करती है इसे जीवित रहने के लिये कम लागत पर उत्पादन करना आवश्यक है । और देखिए, कम लागत पर प्रोडक्शन का उस फैक्ट्री के मजदूरों के लिए मतलब है : छटनी, ज्यादा समय काम करना, वेतन में कटौती आदि । ऊपर दिये दृश्य की कई ढंग से व्याख्या की जा सकती है । हम इसकी तरफ दो नजरियों से देखने की कोशिश करेंगे ।

कोई कह सकता है कि इस फैक्ट्री का चलते रहना देश की अर्थव्यवस्था के लिये बहुत महत्वपूर्ण है और चूंकि देश सर्वोपरि है इसलिए भले ही उन्हें कितनी भी तकलीफ क्यों न हो, मजदूरों को कुर्बानी देने के लिए तैयार रहना चाहिए । यह एक नजरिया है इसे देखने का । दूसरा नजरिया चीजों को एक भिन्न दृष्टिकोण से रखेगा । यह इस पर जोर देगा कि पूंजीवाद, जोकि मजदूरी-प्रथा पर आधारित माल उत्पादन है, इसमें किसी कम्पनी के विश्व मंडी में बने रहने के लिये यह जरूरी है कि वह मालों को कम लागत में बनाये । इस प्रकार कम्पनी का जीवित रहना सीधे-सीधे मजदूरों की बदहाली, उनके शोषण से जुड़ा है । और चूंकि यह इस सामाजिक गठन का मूल चरित्र है, इस समाज व्यवस्था में मजदूरों के लिए खुशहाली के लिये कोई स्थान नहीं है ।

इन दो नजरियों के बीच भेद पर गौर करना महत्वपूर्ण है । आज की दुनियां को टुकड़ों में बांट कर देखने वाला नजरिया दमन शोषण का पक्षपोषण करता है और विश्व मानव समुदाय के उभरने की सम्भावनाओं को नकारता है । दूसरा नजरिया पूंजीवाद की जीवन-क्रिया को समझने की कोशिश करता है और पूंजीवाद का विकल्प प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

(शेष अगले पेज पर)

माटी कहे कुम्हार से

800 लागू करवाने के नाम पर बिचौलिये चन्दा बटौर रहे हैं । मजदूरों को उल्लू बनाने के लिए लाल-पीले झन्डों वाले चण्डीगढ़ में जज को रिश्वत देने के नाम पर मजदूरों से मोटी रकम वसूल रहे हैं । इसी सिलसिले में बिचौलियों ने संघर्ष-बन्द आदि की चिल्ल-पों फिर शुरू कर दी है । ज्यादा पैसे हड़पने के लिए इनमें एक दूसरे से बढ़-चढ़ कर बयान देने की होड़ मची है । इस भागमभाग में अखबारों में एटक के एक लीडर का भी बयान छपा है । यह सज्जन इस समय बाटा फरीदाबाद में यूनियन के जनरल सेक्रेटरी भी हैं । और बाटा फैक्ट्री की कैंटीन के मजदूरों को इस समय भी दो-तीन सौ रुपये महीने में हर रोज 12 घन्टे काम करना पड़ता है·····

लाल झन्डे उठा कर और कम्युनिस्ट का बिल्ला लगा कर बिचौलिये काफी समय से मजदूरों की भलाई के नाम पर पूंजी की सेवा करते रहे हैं । भारत में अपनी करतूतों पर परदे डालने के लिये यहां के नकली कम्युनिस्ट इस या उस देश में उनका स्वर्ग होने का ढोल भी पीटते रहे हैं । इसमें यह सफल भी हुये हैं पर इधर इन पूंजीवादी भेड़ियों, इन नकली कम्युनिस्टों को रोमानिया-पूर्वी जर्मनी-हंगेरी-पोलैंड-रूस-चीन में उठती मजदूर लहर ने बेनकाब कर दिया है । हजारों शहीदों ने अपना खून दे कर बीच सड़क पर नकली कम्युनिस्टों का भांडा फोड़ दिया है । क्रान्तिकारी मजदूर संघर्ष और असली कम्युनिस्ट आन्दोलन के शक्तिशाली बनने के हालात बन रहे हैं ।

"माटी कहे कुम्हार से तू क्या रौंदे मोयि, एक दिन ऐसा होयगा मैं रौंदूंगी तोय" । वाले कबीर के शब्दों को पूर्वी यूरोप के मजदूर नये अर्थ में इस्तेमाल कर रहे हैं । आओ हम भी यहां बिचौलियों को ठोकर मार कर दमन-शोषण से मुक्ति और खुशहाली की राह पर आगे बढ़ें ।

[छपने के लिए सामग्री हम जिस महीने का अंक होता है उसके आरम्भ होने से पहले तैयार करते है । जनवरी अंक के लिए यह सामग्री कम्पोज हो गई थी पर जगह भी खाली छूट गई और छपी भी नहीं । इस बीच ट्रेड यूनियनों द्वारा 3 जनवरी को घोषित हरियाणा भर में कारखानों की हड़ताल पहले 30 जनवरी के लिये स्थगित की गई और अब 30 की जगह 6 फरवरी की तारीख प्रचारित की गई है । ड्रामे के इस सिलसिले का अभी कुछ और चलना नजर आता है ।]

एस्कोर्ट्स

जबरन जमा और कटौती योजना

सरकारी कर्मचारी रुपये-टके का हिसाब लगाने में कुछ तेज होते हैं इसलिये वे पे रिविजन के समय बकाया वेतन तथा मंहगाई भत्ते की किस्तों आदि को सरकार द्वारा जबरन कर्मचारी के जमा खाते में डालने के खिलाफ शोर मचाते हैं । सरकार इस प्रकार कर्मचारियों पर थोपी जबरन बचत को कर्मचारियों के हित में प्रचारित नहीं करती बल्कि अपनी मजबूरी बताती है, हाथ तंग होने का रोना रोती है । पर इधर देखिये एस्कोर्ट्स का हाल ! पेंशन स्कीम के नाम पर बिचौलिये एस्कोर्ट्स मजदूरों पर जबरन बचत करना ही नहीं थोप रहे बल्कि उनके वेतन में कटौती भी कर रहे हैं और ऊपर से इसे एस्कोर्ट्स मजदूरों की भलाई में उठाये एक बड़े कदम के तौर पर फरीदाबाद भर में प्रचारित कर रहे हैं । झूठ और फरेब की कोई सीमा नहीं होती ।

एस्कोर्ट्स के हर मजदूर की तनखा से हर महीने सवा सौ रुपये काट कर करोड़ों का बीमे का धन्धा करवाने का कमीशन कौन खायेगा यह तो

(शेष अगले पेज पर)

हमारे लक्ष्य हैं—1. मौजूदा व्यवस्था को बदलने के लिए इसे समझने की कोशिशें करना और प्राप्त समझ को ज्यादा से ज्यादा मजदूरों तक पहुंचाने के प्रयास करना। 2. पूंजीवाद को दफनाने के लिए जरूरी दुनियां के मजदूरों की एकता के लिए काम करना और इसके लिए आवश्यक विश्व कम्युनिस्ट पार्टी बनाने के काम में हाथ बटाना । 3. भारत में मजदूरों का क्रान्तिकारी संगठन बनाने के लिये काम करना । 4. फरीदाबाद में मजदूर पक्ष को उभारने के लिये काम करना ।

समझ, संगठन और संघर्ष की राह पर मजदूर आन्दोलन को आगे बढ़ाने के इच्छुक लोगों को तालमेल के लिए हमारा खुला निमंत्रण है । बातचीत के लिए बेझिझक मिलें । टीका-टिप्पणी का स्वागत है—सब पत्रों के उत्तर देने के हम प्रयास करेंगे ।

सम्पर्क——मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, एन० आई० टी० फरीदाबाद——121001

एवरी इन्डिया में हड़ताल

25 सैक्टर स्थित एवरी इन्डिया के मजदूर फरीदाबाद के उन मजदूरों में हैं जो यहां के हिसाब से कुछ अधिक वेतन लेते हैं। और पूंजीवादी व्यवस्था के बढ़ते संकट के साथ यह बात एवरी मैनेजमेन्ट की आँखों में बहुत ज्यादा चुभने लगी है। इसलिए एवरी मैनेजमेन्ट ने मजदूरों के वेतन में कटौती की स्कीम बनाई है। इनके लिए मैनेजमेन्ट एक तो ठेकेदारी प्रथा शुरू कर रही है जिसके लिये एवरी फैक्ट्री में ही दीवारें खींच कर उसमें तीन फैक्ट्रियां बना दी हैं। मैनेजमेन्ट ने ठेकेदारों के 30 मजदूर काम पर लगा भी दिये हैं। ठेकेदारी-प्रथा को बढ़ाने के लिये यह जरूरी है कि परमानेन्ट मजदूर निकाले जायं। और यह इसके लिये है कि एवरी मैनेजमेंट ने परमानेन्ट मजदूरों को तंग करना शुरू कर दिया है ऊलजलूल ट्रान्सफर की कार्यवाही मैनेजमेंट का ऐसा ही कदम है। पर बात इतनी ही नहीं है। एवरी मैनेजमेन्ट हर मजदूर को महीने में मिलने वाले रुपयों में से 600 रुपये काटना चाहती है। मैनेजमेन्ट अच्छी तरह जानती है कि प्रत्येक मजदूर की तनखा में से 600 रुपये महीना कटौती करने के लिए उसे मजदूरों को कुचलना होगा। यह इसीलिये है कि एवरी मैनेजमेन्ट सोच-समझ कर मजदूरों को दलदल में फंसाना चाहती है ताकि अपनी बात मनवा सके।

8 जनवरी को मैनेजमेन्ट ने 26 मजदूरों को फैक्ट्री से बाहर ऐसे कामों पर ट्रान्सफर का आदेश दिया जिनसे उन मजदूरों का कोई सम्बन्ध नहीं है। मजदूरों ने ट्रान्सफर पर जाने से इन्कार कर दिया। इस पर मैनेजमेन्ट ने उन्हें फैक्ट्री गेट पर रोक दिया। मैनेजमेन्ट की इस कार्रवाई के खिलाफ मजदूरों ने एक दिन की हड़ताल की और अपने 26 साथियों को फैक्ट्री में काम पर लेने की मांग की। मैनेजमेन्ट ने मजदूरों की मांग नहीं मानी। इस पर मजदूरों ने एक हफ्ते की हड़ताल की पर फिर भी मैनेजमेन्ट नहीं मानी। इन हालात में एवरी के मजदूरों ने **8 फरवरी** से लगातार हड़ताल को जारी रखने का फैसला किया है।

एवरी की कलकत्ता में भी फैक्ट्री है। कलकत्ता फैक्ट्री के मजदूरों के संघर्ष में शामिल होने से एवरी फरीदाबाद के मजदूरों को ताकत मिलेगी और मैनेजमेन्ट कमजोर होगी। इसलिये एवरी के हड़ताली मजदूरों को कलकत्ता एवरी के मजदूरों को अपनी हड़ताल में शामिल करने की कोशिश करनी चाहिये इस सम्बन्ध में कलकत्ता एवरी में हड़ताल से कम कोई भी कदम फरीदाबाद एवरी के हड़ताली मजदूरों को मात्र रस्मी समर्थन होगा। फरीदाबाद एवरी के मजदूरों को यह बात कलकत्ता एवरी के मजदूरों को साफ कर देनी चाहिये। बाटा नगर में तालाबन्दी के समय बाटा की अन्य फैक्ट्रियों में काम होने और महीने में एक दिन समर्थन हड़ताल जैसे रस्मी समर्थन से बाटानगर मजदूर कमजोर पड़े और बाटा मैनेजमेन्ट ताकतवर बनी थी। बाटा में मजदूरों को लगी ठोकर से एवरी के मजदूरों को सीखना चाहिये।

मैनेजमेन्ट के खिलाफ एवरी इन्डिया फरीदाबाद के मजदूरों की एकता और उनका संघर्ष जरूरी है। पर एवरी के इन मजदूरों की एकता तथा संघर्ष एवरी मैनेजमेन्ट और उसके पूंजीवादी तंत्र से निपटने के लिये काफी नहीं है। एवरी के मजदूरों को अपने आस-पास की फैक्ट्रियों के मजदूरों को संघर्ष में शामिल करके संघर्ष को बढ़ाने और तीखा करने की कोशिश करनी चाहिये। एवरी मजदूरों के साथ हैदराबाद एस्बेस्टोज और अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों का जुड़ना मजदूर पक्ष को मजबूत करेगा।

आज आमतौर पर एक कारखाने में किसी एक का पैसा नहीं लगा हुआ। ऐसे में एक कारखाने में मजदूरों के संघर्ष के सीमित रहने से मजदूरों की ताकत कमजोर पड़ती है। एक कारखाने में लम्बी हड़ताल अब मजदूरों की ताकत बढ़ाने की बजाय ताकत घटाती है। आज की हालात में मजदूरों की ताकत बढ़ाने के लिये यह जरूरी है कि एक कारखाने में शुरू हुई हड़ताल अन्य कारखानों में फैले और संघर्ष तीखा हो। इसके लिये एवरी के हड़ताली मजदूरों को कोशिश करनी चाहिये। संघर्ष को तीखा करने के लिये एक कदम के तौर पर एवरी मजदूरों को हर रोज जलूस निकालने चाहिये --- बल्लबगढ़ कोर्ट तक जलूसों से शुरुआत के बारे में मजदूर सोचें।

कानपुर के कपड़ा मजदूरों पर फरवरी 89 में जब पूंजीवादी हमला हो रहा था तब वे मजदूर बिचौलियों के चिकने-चुपड़े आश्वासनों के चक्कर में नहीं फंसे। दस कपड़ा मिलों के 35,000 मजदूरों ने पाँच दिन रेल लाइन जाम करके जीत हासिल की थी। कानपुर के कपड़ा मजदूरों से सीख कर एवरी मजदूरों को पूंजीवादी तन्त्र के नाजुक अंग पर चोट करने की तैयारी करनी चाहिये। इसके लिये फरीदाबाद के मजदूरों को संघर्ष में शामिल करने के लिये एवरी मजदूरों को बढ़-चढ़ कर काम करना होगा। पूंजीवादी तन्त्र के नाजुक अंग पर मजदूरों की सामूहिक चोट से मजदूर पक्ष ताकतवर बनेगा।

महेन्द्रा स्टीलर आटो ट्रक्स

15/3 मथुरा रोड की इस फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट ने 12-1-90 को तालाबन्दी कर दी। जैसे कि अन्य मैनेजमेन्टें करती हैं, महेन्द्रा मैनेजमेन्ट ने भी लाक आउट के लिये तय कानूनी प्रक्रिया की रत्ती-भर परवाह नहीं की। बारम्बार यह देखने में आ रहा है कि पूंजीवादी कानूनों को आज पूंजीवादी सरगने ही खुले-आम तोड़ते हैं। इसलिये कानूनों का हव्वा खड़ा करके बिचौलियों द्वारा नित रचे जाने वाले पूंजीवादी कानूनों के भ्रमजाल को काटने के लिये मजदूरों को सचेत रहना चाहिये।

महेन्द्रा मैनेजमेन्ट ने 22-7-88 को एक समझौते पर दस्तखत किये थे पर उस पर अमल करने से आना-कानी करती रही है। जून 89 से लागू होने वाला हरियाणा सरकार का 800 वाला न्यूनतम वेतन मैनेजमेन्ट ने अभी तक लागू नहीं किया है और मजदूरों द्वारा इसकी मांग करने पर 12 जनवरी को महेन्द्रा मैनेजमेन्ट ने तालाबन्दी कर दी।

एक तरफ पूंजीवादी कानूनों के हिसाब से भी गैर-कानूनी लाक आउट और दूसरी तरफ पूंजीवादी अखबारों में नौकरी के लिये रिक्त स्थानों के विज्ञापन छपा कर महेन्द्रा मैनेजमेन्ट मजदूरों को डरा-धमका रही है।

महेन्द्रा स्टीलर आटो ट्रक्स के मजदूरों की एकता तथा उनका संघर्ष महेन्द्रा मैनेजमेन्ट और उसकी पीठ पर हाथ रखे पूंजीवादी तन्त्र से निपटने के लिये काफी नहीं है। महेन्द्रा के मजदूरों को अपनी ताकत बढ़ाने के लिये अपने आस-पास की फैक्ट्रियों के मजदूरों से तालमेल करके संघर्ष को फैलाने की कोशिश करनी चाहिये। इस तरह के कदम उठा कर शक्तिशाली मजदूर पक्ष को उभारने से ही सब मजदूरों की ताकत बढ़ेगी और पूंजीवादी शक्तियां कमजोर होंगी।

दो नजरिये का शेष

ऊपर दिये उदाहरण से हमने यह दिखाने का प्रयास किया है कि समाज में एक हावी चिन्तन पद्धति है जो शोषण व दमन के ढांचों को विवेक-सम्मत ठहराती है और प्रतिरोध के हर स्वरूप को ताकत या धोखे से मिटाने की कोशिश करती है। दूसरा नजरिया इस समाज के अन्तर-विरोधों से उभरता है। यह दूसरा नजरिया हमारे समाज में मौजूद शोषण और अन्याय को आलोचनात्मक ढंग से परखता और विश्लेषण करता है ताकि हम सब मिल कर ऐसा समाज बनायें जो कि फूट, घृणा, जुनून, अपमान आदि पर आधारित न हो।

अगले लेख में अपने जीवन व विचारों को इन भिन्न दृष्टिकोणों से देखने का हम प्रयास करेंगे और चिन्तन के अलग-अलग तरीकों को समझने की कोशिश करेंगे।

—अ—जी

एस्कोर्ट्स क्रमशः

हमें नहीं मालूम पर यह एक हकीकत है कि बीमा कम्पनियों का धन्धा मुनाफे का धन्धा है और इस मामले में उनका यह मुनाफा मजदूरों की तनखा से निकलेगा। एस्कोर्टस की पेंशन योजना वास्तव में मजदूरों की तनखा में कटौती है।

सरकारी हिसाब से भी आज तीन हजार रुपये महीने में तीन सदस्यों के एक परिवार का मात्र पेट भर सकता है। ऐसे में डेढ हजार का ढोल पीटने वालों द्वारा उसमें से भी जबरन बचत करवाना कल के सुनहरे सपने दिखा कर हमारे काले वर्तमान को और स्याह करना है। और फिर सुनहरा कल भी कैसा? इसकी एक झलक प्रोविडेंट फण्ड के मामले में देखी जा सकती है जहां मजदूरों को अपना खुद का पैसा लेने के लिये रिश्वत देनी पड़ती है।

वास्तव में एस्कोर्ट्स पेन्शन स्कीम मैनेजमेन्ट की स्कीम है। एस्कोर्ट्स की प्रमुख शेयर होल्डर, सरकारी कम्पनी भारतीय जीवन बीमा निगम तो इसमें चांदी कूटेगी ही, एस्कोर्ट्स कम्पनी भी मजदूरों के इस जमा पैसे को गिरवी रख कर और कर्ज लेगी।

ऐस्कोर्ट्स मजदूरों को अपने ऊपर किये जा रहे मैनेजमेन्ट और बिचौलियों के इस संयुक्त हमले के खिलाफ कदम उठाने चाहियें। पेन्शन और इन्सैंटिव स्कीमों जैसे पूंजीवादी भ्रम जालों से मजदूरों को चौकस रहना चाहिये।

संघर्ष का नया रूप : दक्षिण कोरिया के रेलवे मजदूरों ने मार्च 89 में अपने आन्दोलन के एक कदम के तौर पर 25 लाख यात्रियों को मुफ्त रेल यात्रा करवाई। (यह जानकारी हमें काउन्टर इनफोरमेशन पत्रिका से मिली है।)

स्वत्वाधिकारी व सम्पादक शेर सिंह द्वारा आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद से प्रकाशित व अलकनन्दा प्रिंटिंग प्रेस C-III/206, सं. गां. मेमो. न. से मुद्रित